या देवी सर्वभूतेषु जुधारूपेश संस्थिता। नमत्तर्से नमत्तर्से नमत्तर्से नमो नमः ॥ १६ ॥ या देवी सर्वभृतेषु द्यायारूपेष संस्थिता। नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमो नमः ॥ १७॥ या देवी सर्वभूतेषु प्रक्तिरूपेष संखिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १८॥ या देवी सर्व्यभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमो नमः ॥ १८ ॥ या देवी सर्वभूतेषु श्वान्तिक्रपेख संस्थिता। नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमो नमः ॥ २०॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। नमल्खे नमल्खे नमल्खे नमो नमः ॥ २१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु खज्जारूपेण संस्थिता। नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमो नमः ॥ २२ ॥ या देवी सर्व्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमो नमः॥ २३॥ या देवी सर्वभृतेषु श्रद्वारूपेख संस्थिता। नमस्तर्ये नमस्तर्ये नमस्तर्ये नमो नमः ॥ २४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमस्तर्थे नमो नमः ॥ २५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु खच्चीरूपेण संस्थिता। नमस्त्रके नमस्त्रके नमस्त्रके नमो नमः ॥ २६ ॥